Roll No. .....

Total Pages : 6

5385-A1

M.A. (Final) Examination, 2016

HINDI LITERATURE

Paper–V(A)

(रचनाकार का विशेष अध्ययन : जैनेन्द्र कुमार)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

खण्ड–अ

[Marks : 20

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–ब

[Marks : 50

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–स

[Marks : 30

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–अ

इकाई–I

1. (क) जैनेन्द्र कुमार का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) जैनेन्द्र के उपन्यासों की मूल प्रवृत्ति कौन-सी है तथा उनके प्रथम उपन्यास का क्या नाम है?

इकाई–II

(ग) 'त्यागपत्र' उपन्यास की मुख्य नायिका कौन थी? लेखक से उसका क्या संबंध था?

(घ) 'त्यागपत्र' में नारी जीवन की किस समस्या को उकेरा गया है?

इकाई–III

(ङ) 'पत्नी' कहानी का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(च) जैनेन्द्र की प्रथम कहानी कौन-सी है? उसके पात्रों के नाम लिखिए।

इकाई–IV

(छ) पाठ्यपुस्तक में आए जैनेन्द्र के किन्हीं **चार** निबंधों के नाम लिखिए।

(ज) जैनेन्द्र के निबंधों पर किसके विचारों की छाप देखी जा सकती है?

इकाई–V

(झ) जैनेन्द्र के समकालीन मनोविश्लेषणवादी किन्हीं **चार** उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

(ञ) जैनेन्द्र की किन्हीं **चार** प्रमुख कहानियों के नाम लिखिए।

खण्ड–ब

इकाई–I

2. 'मनोविश्लेषणवाद' के आलोक में जैनेन्द्र के साहित्य का अवलोकन कीजिए।

अथवा

3. "जैनेन्द्र के कथा–साहित्य में पात्रों का मानसिक ऊहापोह एवं अन्तर्मन की भावनाओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण हुआ है।" स्पष्ट कीजिए।

इकाई–II

4. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

"समाज के ऊपर चढ़-बैठकर मैं उसे दबा सकता हूँ, बदल नहीं सकता। उसके फलने-फूलने का तो एक ही उपाय है, वह यह कि मैं अपने को समाज की जड़ों में सींच दूँ। अज्ञात रहकर सच्चा बनूँ, झूठा बनकर नामवर होने में क्या धरा है? ओह, वैसी नामवरी निष्फल है, व्यर्थ है, निरी रेत है। आत्मा को खोकर साम्राज्य पाया तो क्या पाया? वह रत्न को गँवाकर धूल का ढेर पाने से भी कमतर है।"

अथवा

5. 'मृणाल' के माध्यम से लेखक ने नारी जीवन को किस रूप में अभिव्यक्ति दी है, सोदाहरण बताइए।

इकाई–III

6. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

"मेरे मन में उस समय तरह-तरह के सिद्धान्त आए। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही होनी चाहिए, रोष का अधिकार नहीं है। प्रेम से ही अपराध-वृत्ति को जीता जा सकता है। आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए।"

अथवा

7. जैनेन्द्र की 'महामहिम' कहानी की मूल चेतना को स्पष्ट करते हुए उसके पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।

इकाई–IV

8. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

"इस आमन्त्रण में यह खूबी है कि इसमें आग्रह नहीं है। आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाजार का आमन्त्रण मूक होता है और उससे चाह जागती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफी नहीं है। और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है!"

अथवा

9. जैनेन्द्र कुमार के निबंधों की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

इकाई–V

10. जैनेन्द्र के समकालीन उपन्यासकारों का परिचय देते हुए जैनेन्द्र की रचनाशीलता पर टिप्पणी लिखिए।

अथवा

11. "जैनेन्द्र नयी चेतना के मनोवैज्ञानिक कथाकार हैं।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि 'पाजेब' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है।

खण्ड–स

इकाई–I

12. जैनेन्द्र का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का परिचय दीजिए।

इकाई–II

13. 'त्यागपत्र' में मृणाल की चारित्रिक विशेषता बताते हुए उपन्यास की मूल भावना को स्पष्ट कीजिए।

इकाई–III

14. मनोवैज्ञानिक कहानीकार जैनेन्द्र की कहानी-कला का परिचय देते हुए 'पत्नी' कहानी की मूल चेतना को स्पष्ट कीजिए।

इकाई–IV

15. निबन्ध के तत्वों के आधार पर जैनेन्द्र के निबन्धों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

इकाई–V

16. जैनेन्द्र की 'खेल' कहानी बाल–मनोविज्ञान पर आधारित है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।